

भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही ।

ग्रन्थ ब्रह्म विवेक

(भाखल दरिया साहेब)

साखी - 9

ब्रह्म विवेक ज्ञान यह, श्रोता सुमति सुधार ।

ज्ञानी समुझि बिचारहीं, उतरहिं भव जल पार ॥

चौपाई

आदि अन्त मध्य रचि राखा । सुमित सार ज्ञान यह भाखा । १ ।

जल थल धरती पवन अरु पानी । आदि अन्त सत्त सहिदानी ।२।

पूर्ण ब्रह्म पुराण बखाना । शिव सनकादि आदि नहिं जाना ।३।

पुरुष पुराण वोय है अविनाशी । जाकी काया काल नहिं नासी ।४ ।

जाके ब्रह्म है पिण्ड पुराना । उदित कला जग रचो निशाना ॥५॥

एक निरंजन करे विचारा । चतुरानन सो पाउ न पारा ।६।

सत्ता कहा झूठ जनि जाने । सतगुरु खोज सत्ता मनमाने ॥७॥

हृदय कमल यह नाम समीपा । अगम गमि है कमल अनूपा । ८ ।

अहे बेअन्त बेकीमति करारा । जिन्दा नाम है अजर पियारा । ६ ।

दूरि कहां तब कहि नहिं जाई । सुरतिवन्त के निकट है भाई । १० ।

निकट रहे सो लखि नहिं आवै । अगम ज्ञान गमि सो पावै । ११ ।

सतपुरुष निश्चय निर्वाणा । निको वल निलोप है ज्ञाना । १२ ।

बिना विवेक भेद नहिं पावै । करे विवेक चरण चित लावै । १३ ।

साखी - २

सतगुरु सत्त सुगन्ध रस, परिमल पारस सार ।

तन के तप्त दूरि सब मेटवे, जग जीव होहिं निनार ॥

चौपाई

अमृत नाम सुबैन निमेरा । बिना विवेक भोष बहुतेरा । १४ ।

सत्ता सूकृत ज्यो करे बखानी । खुले सुपट पृहुप की खानी । १५ ।

ज्यों जल कमल भंवर रस लोभा । रहे समीप जाय चित्त चोभा । १६ ।

अजर नाम वोय जरे न जारा । अक्षय वृक्ष वोय पुरुष निनारा । १७ ।

अमृत सुधा प्रेम रस पाई । मन मोदिक के भूखा बुताई । १८ ।

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दुर्मति तेजि सुमति रस नैना। निर्गुण निरखि नाम सुखा चैन॥१६॥ रूप रेखा उदित उजियारा। अमृत झरे सो निर्गुण सारा॥२०॥ खुले कमल दृष्टि में देखा। अगम रूप यह भेद विवेखा॥२१॥ ताके कहेवो बेचुन चौगुना। रेखा रूप नहीं अहे नमूना॥२२॥ नर के रूप नख सिख जो कीन्हा। एता रूप जगत् रचि लीन्हा॥२३॥	साखी - ३ जल थल धरती पवन पानी, चांद सूर्य निजु बास। ताके रूप रेखा सब कहहिं, पुरुष के कथहिं निराश॥ चौपाई	कथे निराश आस कहाँ पावै। बिना ठांव कहाँ ठवर बतावै॥२४॥ भर्मी भर्मी फिरि भव जल आवै। बिनु सतगुरू को मुक्ति बतावै॥२५॥ चारि चरण मुख धरिहें देहा। जाय मारि तन करिहें खोहा॥२६॥ बहुत कष्ट तन सहहीं भारी। फिरि फिरि देखि गर्भ मह डारी॥२७॥ कबहिं के गर्भ होय विनाशा। फिरि फिरि योनिक गर्भ मह वासा॥२८॥ तीर्थ व्रत सब करहिं बखानी। जीव के दर्द बुझे नहीं प्रानी॥२९॥ गुरु नहीं कीन्हों करी विवेका। बिना विवेक कहु कवने लेखा॥३०॥ देह चीन्हि गुरु करहिं बखानी। भीतर भारी भ्रम की खानी॥३१॥ कर्म अनेक कपट का मूल। लटपट ज्ञान डिम्भ धरि फूला॥३२॥ ज्यों लगि सूक्ष्म भेद नहीं जाना। पण्डित पढ़ि का गर्व भुलाला॥३३॥	साखी - ४ सूक्ष्म भेद निजु ज्ञान है, चारि वेद का मूल। कहे दरिया मगु साफ़ है, पण्डित ताहि न तूल॥ चौपाई	पढे गुने कुछ कर ले लाजा। खोजु मुक्ति तजु पाखण्ड काजा॥३४॥ पाखण्ड भक्ति जीव कर नाशा। जाय जीव काल के त्रासा॥३५॥ जब लगि संत सन्देश न पावै। तब लगि हंस लोक नहीं जावै॥३६॥ जौ लगि सतगुरू मिले न ज्ञानी। तौ लगि कमल न बृगसे बानी॥३७॥ सूर्य तेज कमल मह आवै। दर्शन देखि कमल वृगसावै॥३८॥ कहे दरिया करु शब्द विवेका। अष्टदल कमल सुरति सत देखा॥३९॥ सत् सुकृत यह मुक्ति बखाना। सन्त समझि के सुरति समाना॥४०॥	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	छापा सनदि गुप्त करि राखे। योग युक्ति अमृत रस चाखे।६३।	सतनाम	देवा देई यह त्रिगुण फन्दा। तजि अनीत रहे निर्द्वन्दा।६४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम सबको सिरताजा। आदि अन्त मध्य है छाजा।६५।	सतनाम	सोई सत्ता गहो चित्त लाई। सतनाम निजु प्रेम बढ़ाई।६६।	सतनाम	गुरु गुरु में भेद विचारा। सतगुरु खोजि करै निरुआरा।६७।	सतनाम
सतनाम	तुलसी तारक मंत्र बखाना। राम तारक से सुमिरन ठाना।६८।	सतनाम	आँधर गुरु बहिर है चेला। पाखण्ड कर्म सबन्हि मिलि खेला।६९।	सतनाम	जो मुख मन्त्रे लिखि ले आवै। सो सुमिरन दे शिष्य दृढ़ावै।७०।	सतनाम
सतनाम	वह तो भेद अगम है मूला। सत्ता गहे सो होय स्थूला।७१।	सतनाम	वह तो मुख रसने नहिं कहिया। गहे सत प्रगट होये रहिया।७२।	सतनाम	वह तो झरी है हृद बेहदा। होय साफ तजे सब द्वन्दा।७३।	सतनाम
सतनाम	झूठा योग युक्ति नहिं जाना। योग युक्ति बिना कहु कैसे माना।७४।	सतनाम	झूठा वैद्य व्याधि नहिं चीन्हा। अवरि औषधि अवरि कहि दीन्हा।७५।	सतनाम	साखी - ७	
सतनाम	सोई दर्द सोई दारु, मिले हकीम जो आय।					
सतनाम	हरदम दारु नाम है, सत्तगुरु दिया दिहाए॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	जासे कफा कत्ल करि डारे। साफ नूर दृष्टि नहिं टारे।७६।	सतनाम	पूरा घट कबहिं नहिं डोले। ज्ञान रत्न युक्ति जग खोले।७७।	सतनाम	जब लगि महल की खबरि न पावै। कवन टहल कहु कासो लावै।७८।	सतनाम
सतनाम	जब लगि पुष्प गुंथै नहिं माली। त्यों लगि हार कैसे ग्रिव डाली।७९।	सतनाम	जब लगि चन्दन रगरि न आवै। कैसे चरतित अंग चढ़ावै।८०।	सतनाम	जब लगि हीरा न हने निहाई। खरा खोटा कहु कैसे बुझाई।८१।	सतनाम
सतनाम	जब लगि चाँदी ताव न दीजे। तब लगि मोल जगत नहिं लीजै।८२।	सतनाम	कहे दरिया निजु शब्द है सारा। छुटि जाये त्रिमिर भव उजियारा।८३।	सतनाम	मोती पारख सब कोई जाना। हीरा पारख सब जगत् बखाना।८४।	सतनाम
सतनाम	कंचन पारख करे बनाई। चाँदी पारख सब जग लाई।८५।	सतनाम	औरि नग सब करे बखाना। जौहरी जाहिर सब जग जाना।८६।	सतनाम	सत्तगुरु पारख बिरले केहु माना। जाके सुरति साथ है ज्ञाना।८७।	सतनाम
सतनाम	4					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सत्त रहनि सत्त करे बिनाई। मुक्ति महात्म सो जन पाई।८८।	सतनाम	सो हीरा है असल करारा। अन वेधित जग में उजियारा।८९।	सतनाम	ताके संशय काल न आवै। अगम निगम मूल गमि पावै।९०।	सतनाम
सतनाम	हरि भगतन्ह जो ज्ञान बखाना। त्रिगुण फन्द तेहु नहिं जाना।९१।	सतनाम	मन बन्दहिं फिरि निन्दहिं जाई। सत्तकर्ता मन के ठहराई।९२।	सतनाम	मनहिं बोलता ब्रह्म बखाना। मनहिं के सुमिरन जग ठाना।९३।	सतनाम
सतनाम	तीन अंश एक करि लेखा। अरध दृष्टि ज्ञान नहिं देखा।९४।	सतनाम	सतपुरुष वोय आपुहिं अहई। दूजा माया निरंजन कहई।९५।	सतनाम	तीजे बोलता ब्रह्म विचारा। सुकृत अंश सकल संसारा।९६।	सतनाम
सतनाम	<p>साखी - ८</p> <p>सत्त असत्त चीन्हें नहीं, मन राखै प्रतीति।</p> <p>करामाति कायल करे, लेई बाजीगर जीति॥</p> <p>चौपाई</p>					सतनाम
सतनाम	करामाति तौ सबों बखाना। चाटक देखि सब जगत् भुलाना।९७।	सतनाम	बाजीगर डंक तमाशा कीन्हा। सबकी बुद्धि भ्रम कर लीन्हा।९८।	सतनाम	नाटक नेटुवा सबे दिखावे। कहो मुक्ति काहे नहिं पावे।९९।	सतनाम
सतनाम	सो बाजी हरि भक्त बखाना। इष्ट पूजि सुमिरहिं सब ज्ञाना।१००।	सतनाम	गुड़ देखाय ईंट अस भाखा। पाखण्ड कर्म काल रचि राखा।१०१।	सतनाम	ऋद्धि सिद्धि के इष्ट जो राधे। भैरो भूत योग सब साधे।१०२।	सतनाम
सतनाम	ताकी मुक्ति कबहिं नहिं होई। जन्म-जन्म जहँड़ावे सोई।१०३।	सतनाम	खसम छोड़ि अवरि कै लागे। उलटि चाल ज्ञान सो पागे।१०४।	सतनाम	अमृत विष का करे खमीरा। उलटि चाल चंचल नहिं थीरा।१०५।	सतनाम
सतनाम	<p>साखी - ९</p> <p>जादो भैरो भूत यह, इष्ट पूजै की साधि।</p> <p>ताकी मुक्ति कबहिं नहिं, यम जीव करे उपाधि॥</p> <p>चौपाई</p>					सतनाम
सतनाम	यह तो भेद सबन्हि ते न्यारा। सत्त रहिन यह असल करारा।१०६।	सतनाम	ज्यों चाहे निजु मुक्ति करारा। तौ माने सत्त शब्द हमारा।१०७।	सतनाम	सत्त शब्द मुखा अमृत बानी। ब्रह्म अनूप प्रेम पद ज्ञानी।१०८।	सतनाम
सतनाम	सुमिरहु नाम चित्त गहि सोई। वेद पढ़े का पण्डित होई।१०९।	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
शास्त्र	गीता	ज्ञान	अर्थावै	जीव	के दया	दर्द नहिं आवै ॥११०॥
संझा	तरपण	करे	बखाना	अमृत	तेजि	विषय रस पाना ॥१११॥
मुवला	पितर	के	सेवा	ठानै	देई	जल पितृपक्ष मानै ॥११२॥
मंजन	संयम	करे	निति	नेमा	छोड़ि	भक्ति पत्थल से प्रेमा ॥११३॥
मूदहिं	आंखि	बजावहिं	घंटा	ज्यो	बाजीगर	खोलहिं बंटा ॥११४॥
ऐसो	पाखण्ड	करे	बनाई	बाउर	लोग	सब करे बड़ाई ॥११५॥
अन्त	कहा	देखाहु	सो	ज्ञाना	आदि	कहो ब्रह्म परवाना ॥११६॥
ब्रह्मा	पूछा	ज्योति	से	जाई	पुरुष	कौन कहो समुझाई ॥११७॥
निजु	गहि	अर्थ	सब	कहो	बुझाई	आदि अन्त सब देहु देखाई ॥११८॥
को है	पुरुष	केकर	तुम	नारी	कहु	माता सब अर्थ विचारी ॥११९॥
तब	तो	हम	तुम	और	न	कोई ॥१२०॥
बिना	पुरुष	कहु	कैसन	नाऊँ	पूछे	कहां बताइबि ठाऊँ ॥१२१॥
साखी - १०						
कहे ज्योति सुनु ब्रह्मा, तुम जेठो पुत्र हमार।						
पिता खोज कहाँ खोजहु, हम से यह संसार॥						
चौपाई						
कहे	ब्रह्मा	सुनु	मातु	भवानी	पिता	खोज करब हम जानी ॥१२२॥
पुरुष	दरश	देखब	हम	आँखी	तुमसे	वचन बोलब यह साखी ॥१२३॥
करि	प्रणाम	जो	चले	तुरन्ता	पर्वत	झाड़ जहाँ एकन्ता ॥१२४॥
तहाँ	जाय	आलोकहिं	ज्ञाना	करहिं	तपस्या	योग जो जाना ॥१२५॥
करो	ध्यान	समाधि	लगाई	होहहे	पुरुष	मिलिहे मोहिं आई ॥१२६॥
तुरतहिं	मन	मत	उपजा	भाऊ	पाखण्ड	कर्म काल कर नाँऊ ॥१२७॥
ऐसा	पाखण्ड	कियो	बनाई	पत्थल	फूल	जो चन्दन चढ़ाई ॥१२८॥
फूल	आगे	धरि	करहिं	समाधी	निस	वासर ध्यान रहे जो राधी ॥१२९॥
बहुत	समाधि	कीन्ह	जो	योगा	खट्टा	मीठा तेजा रस भोगा ॥१३०॥
आंख	मूँदि	के	करहिं	समाधी	आसन	पवन योग जो साधी ॥१३१॥
धरि	धरि	ध्यान	अस	करहिं	विवेखा	सपने कबहिं पुरुष नहिं देखा ॥१३२॥
करि	करि	योग	कष्ट	तन	आवै	पुरुष दरश कबहीं नहिं पावै ॥१३३॥
तुरतहिं	पाखण्ड	कर्म	जो	कीन्हो	ताके	पुरुष दरश नहिं दीन्हो ॥१३४॥
साखी - ११						
जीन्हि पुरुष क्रुम के किन्हा, रचा भवानी जानि।						
ताके खोजहीं ब्रह्मा, रहे हारि जीव मानि॥						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	बहुत दिवस बीत जब गयऊ। आदि भवानी खोजत भयऊ।१३५।	सतनाम	आदि भवानी बोली बिचारी। गायत्री से अस कहा पुकारी।१३६।	सतनाम	जाहु गायत्री ब्रह्मा के पासा। जाये वचन करिहो प्रकाशा।१३७।	सतनाम
सतनाम	ब्रह्मा से वचन कहिहो समुझाई। चलहु तुरन्त तुम्हें ज्योति बोलाई।१३८।	सतनाम	गई गायत्री ब्रह्मा के ठाँऊ। बोली वचन कहा जो नाँऊ।१३९।	सतनाम	चलहु बेगि ज्योति के पासा। कहों वचन तुम सुनहु हो दासा।१४०।	सतनाम
सतनाम	तुम्हें बोलीवनि हम जो आई। ज्योति सन्देशा सुनो चितलाई।१४१।	सतनाम	तुम बिनु होत है जग असाधी। चलो तुरन्त तुम छोड़ो समाधी।१४२।	सतनाम	कोपि के ब्रह्मा बोले बानी। तै गायत्री सदा अज्ञानी।१४३।	सतनाम
सतनाम	बिना दरश कैसे गृह जाई। पिता खोज करन हम आई।१४४।	सतनाम	अब तो तन में लागी लाजा। बिना दरश कहु कैसन काजा।१४५।	सतनाम		सतनाम
			साखी - १२			
सतनाम	कहे गायत्री सुनु ब्रह्मा, तुम मानहु कहा हमार।	सतनाम	पिता दरश कहाँ पाइहो, माता दरश है सार॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	पूछे बोलब कवन सो बानी। कवन भेद कहब सहिदानी।१४६।	सतनाम	कहा गायत्री बोलब हम साखी। पुरुष दरश देखा निजु आंखी।१४७।	सतनाम	सुनि के ब्रह्मा भये उदासा। बेगि चले ज्योति के पासा।१४८।	सतनाम
सतनाम	जहाँ बैठी रहि आदि भवानी। करि प्रणाम प्रेम की बानी।१४९।	सतनाम	हँसि के बचन जो बोलि तुरन्ता। कहो दरश पुरुष के अन्ता।१५०।	सतनाम	तब ब्रह्मा अस बोले बानी। कहो भेद गायत्री जानी।१५१।	सतनाम
सतनाम	बोली गायत्री वचन विचारा। सतपुरुष देखा कर्तारा।१५२।	सतनाम	सुन गायत्री झूठ तैं बोली। दीन्ह श्राप भरमत तैं डोली।१५३।	सतनाम	कवन कर्म हम कीन्हों पापा। जो तुम हमके दीन्हों श्रापा।१५४।	सतनाम
सतनाम	वोयल के वोयल तुम्हें जो लागै। जाकर कर्म ताहि संग लागै।१५५।	सतनाम	त्रिय देवा त्रिय मन्त्र जो भाषा। त्रिविधि ज्ञान जगत् में राखा।१५६।	सतनाम	तन्त्र मन्त्र यह चाटक योगा। शास्त्र वेद कथा रस भोगा।१५७।	सतनाम
सतनाम	विष्णु बोले ब्रह्मा से बानी। आदि पुरुष निर्गुण तुम जानी।१५८।	सतनाम	तब ब्रह्मा अस बोले वचना। हाथ पाँव नहिं मुखा रसना।१५९।	सतनाम		सतनाम
			7			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सबते भिन्न रहे निरंकारा। अति तीक्ष्ण नहिं रूप अंकारा।१६०।	जेठ युगाधि सबे तुम जाना। तुम ब्रह्मा हहु अविगति ज्ञाना।१६१।	साखी - १३	मन की प्रतिमा देखि के, मानेवो थीत करार।	यह मन्त्र त्रिय देवका, डारेव सकल पसार।।	चौपाई	गुरु सृष्टि कै ब्रह्मा भूले। विषम सरोवर सब मिलि झूले।१६२।
योगी यती येहि मत ठयऊ। अगम ज्ञान भेद नहिं पयऊ।१६३।	धर्मराय जीव करे विनाशा। बिनु चीन्है ग्रिव डारे फाँसा।१६४।	जैसे मारे गाय कसाई। बेदर्द खून करे जीव जाई।१६५।	आपुहिं पहरू चोर है सोई। ठग ठाकुर धर मूसे वोई।१६६।	आगि लगाय धर सूते तानी। कैसे जरत बुतावहिं पानी।१६७।	जाके कारण योगी जागै। उलटि साँप सँपेहरीयहिं लागै।१६८।	जाकर भक्ष सो करे अहारा। धीमर जाल मीन कह डारा।१६९।
तीन लोक है जाल जंजाला। बिरला नाचै अविगति काला।१७०।	एके चोर सकल जग डन्डे। बिना तेग कैसे रण मन्डे।१७१।	अति चंचल क्षीण है भाई। ज्यों देखो त्यों करे लड़ाई।१७२।	मृतक अन्ध है काल बेकारा। मन मूसे जीव करे अहारा।१७३।	मृतक अन्ध है काल बिकारा। मन मूसे जीव करे अहारा।१७४।	जिमिकर कलपे जल बिनु मीना। अंवटि प्राण काल ने छीना।१७५।	छल बल बुद्धि सबकी जो हरई। विषम बान उर अन्तर दहई।१७६।
साखी - १४	विषम सरोवर तप्त जल, धै धै डारे काल।	सुखसागर जीव छोड़ि के, चहु झुनुका की जाल।।	चौपाई	झुनुका जाल सकल जीव फन्दा। पकरि प्राण काल ने रंदा।१७७।	कोटि बन्धन कै बांधे गाढ़ी। पकरि प्राण के लेत है काढ़ी।१७८।	मानहु सत्त शब्द हम भाषा। चीन्हहु सुकृत जो जीव राखा।१७९।
चीन्हहु तेहि करे प्रतिपाला। सत्त सुकृति हैं ज्ञान रिसाला।१८०।	छपलोक ले हम चलि आई। सत्त कथा जो यहां सुनाई।१८१।	दुई पर्वत जल बहे सढारा। तेहि बीचि सीढ़ी सत्त करतारा।१८२।				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
वेद कितेब दोई फन्द पसारा। तेहि फन्दा में जीव बेचारा।१८३।	धोखा देई जीव सब राखा। कर्म अनेक वेद जो भाषा।१८४।	कहे दरिया चीन्हु निर्मल बानी। जाते मेटे नर्क की खानी।१८५।	जग में जस है नाम प्रतापा। मेटहिं सकल दुःख यम के तापा।१८६।	नाम विमल जो करे बखानी। ब्रह्मा विष्णु से आगे जानी।१८७।	उपजे बिनसे अजर न कहिया। धरि-धरि देह बिनसि फिरि रहिया।१८८।	अजर काया जिन्ह युग-युग राखा। असल नाम ताहि को भाषा।१८९।
वोय नहिं बिनसहिं मरे न जारा। हाथ पाँव मुख वचन पीआए।१९०।	सोई सत्त अजर करतारा। सत्तनाम है असल करारा।१९१।	वर्णों अजर लोक परवाना। जहाँ बैठे सब हंस सुजाना।१९२।	जहवां झलके अजरा ज्योती। सेत मण्डल झलके निजु मोती।१९३।	अजर लोक उदित उजियारा। जहाँ पुरुष हहिं अक्षय करारा।१९४।	जहाँ पलंग है पुष्प बिछाया। झरे गुलाब मुख अमृत पाया।१९५।	छत्र मनोहर सब सिर छाया। वृगसे पुष्प डाँक सभ धाया।१९६।
अमर काया हंस जहाँ पाई। बोलहिं बैन सुगन्ध सुहाई।१९७।	अमर वस्त्र मैल ना होई। टूटे फाटे कबहिं नहिं सोई।१९८।	धोबी धोवे न करे पखारा। दिन-दिन सेत उदित उजियारा।१९९।	साखी - १५	ऐसन पदुम प्रकाश है, तहाँ जिमि नहिं जोर।	अविगति अगम अपार है, तीन लोक के ओर॥	चौपाई
अविगति चँवर सबन्हि सिर ढारा। अविगति पलंग पुहुप है सारा।२००।	अविगति अमृत सब कोई चाखे। पल-पल सुरति प्रेम रस राखे।२०१।	सुख सागर है अविगति खानी। जो जीव जाय होय निर्बानी।२०२।	जो जीव जाने शब्दहिं माने। सोई लोक पयाना ठाने।२०३।	हृदय मुखा बोले सत्त बानी। पावे प्रेम तहाँ अविगति खानी।२०४।	मनहिं बिलोय तेजे सब धोखा। शील सन्तोष अगम गमि पेखा।२०५।	तेजे भोग रस रोग विकारा। योग युक्ति रस रहे करारा।२०६।
पहिले सत्त तब मूल दृढ़ावै। बिना सत्त मूल नहिं पावै।२०७।	जीव के पूंजी नाम गहि राखे। ब्रह्म दृढ़ाय अमृत रस चाखे।२०८।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दिव्य दृष्टि गगन है डोरी। प्रेम प्रति अमृत रस बोरी।२०६।	सतनाम	सम्पूर्ण कला ब्रह्म उजियारा। तन की तप्त मेटे यम जारा।२१०।	सतनाम	साखी - १६	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया यह बुझहु, भेद ब्रह्मनिज ज्ञान।	सतनाम	अगम गमि करु ज्ञान में, पूरो पद निर्बान।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	ब्रह्म लोक ब्रह्म जो कीन्हा। विष्णु लोक विष्णु रचि लीन्हा।२११।	सतनाम	शिव लोक शिव स्थाना। येहि बीच औरि लोक प्रवाना।२१२।	सतनाम	शृंग शृंग पर्वत है भाई। तहवाँ धाम जो रचा बनाई।२१३।	सतनाम
सतनाम	एता लोक नहिं विस्तारा। रचो धाम तहाँ मन्दिर सँवारा।२१४।	सतनाम	यह सभ किरतम कियो बनाई। तहवां अमल काल को भाई।२१५।	सतनाम	यह सब कृतम बिरला केहु जाना। तहाँ पत्थर हैं जिमी जहाना।२१६।	सतनाम
सतनाम	तहवाँ चाँद सूर्य दिन राती। जगमग तारा उगेवो बहु भाँती।२१७।	सतनाम	तहाँ न पलंग है पुष्प बिछाया। तहाँ न फूल मन्दिर है छाया।२१८।	सतनाम	तहाँ न छत नहिं पुष्प वेवाना। तहाँ चँवर नहिं अविगति जाना।२१९।	सतनाम
सतनाम	तहाँ न पिउषण अमृत चाखे। बैन सुबैन तहाँ नहिं भाषे।२२०।	सतनाम	अमर काया तहाँ हंस न पावै। फेरि भर्मे चौरासी आवै।२२१।	सतनाम	तीनि लोक हे काल के हाथा। धै-धै ठोंके सबके माथा।२२२।	सतनाम
सतनाम	पर्दा एक निरंजन डारा। तीनि लोक भव मन करतारा।२२३।	सतनाम	वेद कितेब तहाँ ले जाना। आगे गमि ज्ञान नहिं आना।२२४।	सतनाम	छप लोक ले कीन्ह पयाना। यह भेद बिरला केहु जाना।२२५।	सतनाम
सतनाम	छप लोक ले हम चलि आई। जंबू द्वीप जीव नंद छोड़ाई।२२६।	सतनाम	सत्तपुरुष फिरि आपहुं आये। निजु भेद सब हमहिं दिखाये।२२७।	सतनाम	आदि अन्त सबे परवाना। लोक बरनों कथा सब ज्ञाना।२२८।	सतनाम
सतनाम	सब जीव छपलोक की खानी। बूझहु सत्त शब्द यह बानी।२२९।	सतनाम	साखी - १७	सतनाम	सत्तगुरु मालिक जीव के, देखहु निर्मल ज्ञान।	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया धोखा तेजहु, देखहु सत्त निशान।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम	राम जन्म दशरथ गृह भयऊ। तासु गुरु वशिष्ट जो रहेऊ।२३०।	सतनाम
सतनाम	राम नाम जो मन्त्र बखाना। विदित विदित सुमिरहिं सब ज्ञाना।२३१।	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
स्वोदिक तामस यह जग भाषे। राज काज सभ मन में राखे।२३२।	श्रवण सिखावहिं भोग विलासा। यह कर्ता के अजब तमाशा२३३।	जनक ऋषि धर रही कुमारी। रचा स्वयम्बर जग प्रचारी।२३४।	धरा धनुष तहाँ बड़ा कठोरा। एके मोहनी जगत् बटोरा।२३५।	ऋषिराज तहाँ चलि गयऊ। जनक स्वयम्बर जहवाँ ठयऊ।२३६।	विश्वामित्र जो मन्त्र विचारा। रामचन्द्र तहवाँ पगु ढारा।२३७।	ऋषि के संग जनकपुर गयऊ। जनक स्वयम्बर देखत भयऊ।२३८।
			साखी - १८			
			देखहिं कौतुक नर नारी, सभ कोमल राजकुमार।			
			सीता उठि झरोखे झांकहिं, सुन्दर प्रेम पियार॥			
			चौपाई			
मोहनी बान राम कहँ लागा। भौ विकल मन मत होये जागा।२३९।	रंग भूमि धनुष जहां राखा। तोरा धनुष तब जय जय भाषा।२४०।	गावहिं मंगल सब नर-नारी। कीन्ह ब्याह सब जग प्रचारी।२४१।	त्रिभुवन जाके सब जग जाना। सो मोहनी के हाथ बिकाना।२४२।	तीनि लोक जाके परवाना। ता सिर काले कीन्ह पयाना।२४३।		
			साखी - १९			
			तीनि लोक के ठाकुर, भूलि परा भौ ज्ञान।			
			जो मोहिनी सुर नर मुनि डंडे, सो न परा पहचाना॥			
			चौपाई			
मन चरित्र उनहुँ नहिं जाना। जो ठाकुर तीन लोक बखाना।२४४।	एक निरंजन सब कोई धावै। अविगति की गति पार न पावै।२४५।	ज्यों ठाकुर करता है रामा। ताके भोग कौन है कामा।२४६।	ताके राज काज का सोगा। ताके नारि पुरुष का भोगा।२४७।	मोहनी माया चुभुकि चित्त लीन्हा। डारि ठगौरी ते नहिं चीन्हा।२४८।	सीता भवानी गृह ले आये। राज काज सब मन्त्र सुनाये।२४९।	अविगति की गति जानि न ऐऊ। राज छोड़ि जंगल के गैऊ।२५०।
सीता उठि के संग जो लागी। काल दगा लीन्हों सिर मांगी।२५१।	रोवहिं कलपहिं शोक सन्तापा। कवन कर्म कीन्हों विधि पापा।२५२।	सिया राम लषण सग भाई। तीनों प्राण जंगल के जाई।२५३।	पत्र कुटी जो तहाँ संवारा। कन्दमूल सब कीन्ह अहारा।२५४।			
			11			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	करहिं तपस्या संग लिये नारी। रहहिं जंगल दुःख सहहीं भारी।२५५।	सतनाम	मन ने एक प्रपंच लगाई। माया के मृगा तहाँ चलि आई।२५६।	सतनाम	कनक रुप चंचल है चोरा। देखा राम तब धनुष टँकोरा।२५७।	सतनाम
सतनाम	क्षण महुँ दूरि निकट चलि जाई। पीछे राम लगे तब धाई।२५८।	सतनाम	आगे गये जंगल जहाँ भारी। कोह काफ जहवाँ अँधियारी।२५९।	सतनाम	रोवहिं सीता बहुत बिलखाई। लषण जाय देखहु तुम भाई।२६०।	सतनाम
सतनाम	कीतो बाघ सिंह ने मारा। की मृगा नहिं हतेवो भुवारा।२६१।	सतनाम	लषण विचारहिं मन पछताई। दुई दुःख मोहिं व्यापे भाई।२६२।	सतनाम	यहां रहों सीता दुःख माना। सोचहिं बुद्धि विचारहिं ज्ञाना।२६३।	सतनाम
सतनाम	यह प्रपंच लषण ने जाना। सोने का मृगा कहिं ब्रह्म समाना।२६४।	सतनाम	साखी - २०	सतनाम	सत्त का रेखा खैचि कै, सिया सौपेवों तेहि जानि।	सतनाम
सतनाम	जब लगि राम पलटि आवहिं, सिया वचन लेहु मानि॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	छल बल बुद्धि कोई जो छलेइ। रेखा से बाहर नहिं टरई।२६५।	सतनाम
सतनाम	सत्त का रेखा बैठु विचारी। बाहर पाँव तनिक नहिं डारी।२६६।	सतनाम	लषण के सत्त जो बसे शरीर। सब प्रपंच जानु मति धीरा।२६७।	सतनाम	लषण गये राम के पासा। यहवां काले कीन्ह तमाशा।२६८।	सतनाम
सतनाम	गेरुवा वस्त्र भेष जो कीन्हों। आशीर वचन सीता कह दीन्हा।२६९।	सतनाम	दानव रूप सीता नहिं चीन्हों। लषण कहा कछु गमि ना कीन्हों।२७०।	सतनाम	नारि चोर परिपंच जो कीन्हों। बुद्धि के बल सीता हरि लीन्हों।२७१।	सतनाम
सतनाम	लंका पति लंका के गयऊ। पलटि राम गृह खोजत भयऊ।२७२।	सतनाम	पत्र कुटी देखा अँधियारा। खोजहिं चहुं दिश करहिं पुकारा।२७३।	सतनाम	बाहर भीतर खोजहिं जाई। रोवहिं राम लषण दोनों भाई।२७४।	सतनाम
सतनाम	रोवत सोचत भया बिहाना। खोजत बन खण्ड सकल निदाना।२७५।	सतनाम	आगे होय गमि जो कीन्हों। सीता तो रावण हरि लीन्हों।२७६।	सतनाम	साखी - २१	सतनाम
सतनाम	यहाँ राम वहाँ रावण, बाजी रचो बनाय।	सतनाम	मन प्रपंच जाने नहीं, भीड़े रण मँह जाय॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	राम किया रावण सक चूना। भया गर्द नहिं रहा नमूना।२७७।	सतनाम	तीन भुवन के राम जो राजा। संग सिया लिये भया अकाजा।२७८।	सतनाम	करे विवेक बिचारे कोई। सत्त शब्द बुझो नर लाई।२७९।	सतनाम
सतनाम	नारी संग होखे रस भोगा। भक्ति भाव नहिं होखे योगा।२८०।	सतनाम	नारि रूप है संग विकारा। जानि के पांव अग्नि में डारा।२८१।	सतनाम	अनल तूल के होय प्रसंगा। पल में जारि करे सब भंगा।२८२।	सतनाम
सतनाम	जापर दृष्टि नारी की लागी। शीतल तन अग्नि होय जागी।२८३।	सतनाम	जैसे हाँडी अदहन दीजै। आग लगाय गर्म करि लीजै।२८४।	सतनाम	लागी आँच बाफ जो आवा। कामिनि संग काम जो धावा।२८५।	सतनाम
सतनाम	होय प्रसंग तब तप्त मलीना। जैसे क्षीर खटाई भींना।२८६।	सतनाम	जैसे धून काष्ठ के लीन्हा। सब रस लेई छोड़ि जो दीन्हा।२८७।	सतनाम	नित नित हीरा झारे कोई। झारत झारत चुन्नी होई।२८८।	सतनाम
सतनाम	तैसे ब्रह्म भया जो छिना। जेवो सेवार जल करे मलीना।२८९।	सतनाम	बिना काम तप नहिं जागै। योग युक्ति जतन से पागै।२९०।	सतनाम		सतनाम
			साखी - २२			
सतनाम	कहे दरिया समुझहु ज्ञानी, योग युक्ति निजु ज्ञान।	सतनाम	मानहु शब्द हमार यह, जो जीव रहे अमान॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	युक्ति बिना सब योग ओराना। ज्यों लगि युक्ति ज्ञान नहिं जाना।२९१।	सतनाम	ज्यों लगि सत्तगुरु मिले न दाता। तौं लगि काल करे उत्पाता।२९२।	सतनाम	खोजहु सत्तगुरु जो जीव बांचे। नहिं तो काल सदा सिर नाचे।२९३।	सतनाम
सतनाम	नहिं तो यम के हाथ बिकाना। खोजहु सत्तगुरु निर्मल ज्ञाना।२९४।	सतनाम	चीन्हें बिना सुर नर मुनि गयऊ। मन प्रपंच जानि नहिं अँऊ।२९५।	सतनाम	अक्रुषि जो जाय तपस्या कीन्हा। दिव्य दृष्टि नाहिं चित दीन्हा।२९६।	सतनाम
सतनाम	कुदृष्टि नारि तासु चित लागा। मछोद्री देखि काम जो जागा।२९७।	सतनाम	ताकीर सिपित करे बखाना। सो रिखि जम के हाथ निकाना।२९८।	सतनाम	जो इन्द्री गहि राखिन्ह योगा। सो मन छल बल कीन्हों भोगा।२९९।	सतनाम
सतनाम	तासु नारि से भयै जो व्यासा। कीन्हों वेद ज्ञान प्रकाशा।३००।	सतनाम	ताके सब ब्रह्मा करि भाषे। सोई वेद जगत् सभ राखे।३०१।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	पाखण्ड करि के ज्ञान सुनावै। असल योग युक्ति नहिं आवै।३०२।	सतनाम	सत्त विवेकी बिरला केहु भयऊ। सोई मता मुनि ज्ञानिन्ह ठयऊ।३०३।	सतनाम	सो मगु चलत सुगम सब लागै। मन मत ज्ञान भोग रस पागै।३०४।	सतनाम
सतनाम	व्यास पुत्र शुकदेव जो भयऊ। योग युक्ति ज्ञान मत ठयऊ।३०५।	सतनाम	उलटि ब्यास कहँ कहेवो बुझाई। ऐसो ब्रह्म ज्ञान उन्हि पाई।३०६।	सतनाम	ब्रह्म सरूप भक्ति उन्हि जाना। योगी सो जो मन पहचाना।३०७।	सतनाम
सतनाम	<p>साखी - २३</p> <p>मन परचे बिनु योगी, डारे मोहनी मारि।</p> <p>कहे दरिया प्रकट देखो, सत्त शब्द निरुआरि॥</p> <p>चौपाई</p>					सतनाम
सतनाम	राज ऋषि दुर्वासा रहेऊ। जहवाँ जन्म कृष्ण के भयऊ।३०८।	सतनाम	कीन्हों योग जो आतम जारा। कन्द मूल दूबि कीन्ह अहारा।३०९।	सतनाम	आसन बांधि जोग समाधी। योग युक्ति रहे सो राधी।३१०।	सतनाम
सतनाम	निरंकार के सुमिरहिं ज्ञाना। रक्षक भक्ष कंह नहिं पहचाना।३११।	सतनाम	कौन पुरुष करे प्रतिपाला। कौन मारे बाण विशाला।३१२।	सतनाम	को मालिक को खर्चनिहारा। ज्ञान गमि नहिं कीन्ह विचारा।३१३।	सतनाम
सतनाम	मन हंकार तपस्या किएऊ। कला एक निरंजन ठयऊ।३१४।	सतनाम	मनसा दूत जो तन में लागा। इन्द्री काम रसना रस जागा।३१५।	सतनाम	नासा चक्षु चाहे रस जोगा। पाँचों इन्द्री खटरस भोगा।३१६।	सतनाम
सतनाम	मनसा दूत तहाँ ले गयऊ। इन्द्र सभा जहवाँ सब रहेऊ।३१७।	सतनाम	बहुत भांति से आदर कीन्हा। इन्द्र उठि के आसन दीन्हा।३१८।	सतनाम	तब ऋषि ऐसन बोले विचारी। नाच दिखावहु सुन्दर नारी।३१९।	सतनाम
सतनाम	तब उर्वशी के बेगि बोलाई। सैन समाज तहाँ चलि आई।३२०।	सतनाम	उलटा पलटा कीन्हों साजा। ऋषि के मन में लागी लाजा।३२१।	सतनाम	काल रूप उर्वसी आई। ऋषि के मन में क्रोध लगाई।३२२।	सतनाम
सतनाम	काल रूप ऋषि नाहीं चीन्हा। ताके ऋषि श्राप जो दीन्हा।३२३।	सतनाम	दिन तुरंगिनि नीसु होये नारी। सवा लाख जीव घात खुमारी।३२४।	सतनाम	कीन्ह तपस्या तन मन जारी। सो कौतुक का देखिये नारी।३२५।	सतनाम
सतनाम	अन्न छोड़ि दूबि करे अहारा। ता सिर काल खेले बरियारा।३२६।	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २४			
सतनाम			देखो कौतुक सब मिलि, मन मत भाव अनंग। सत्त शब्द चीन्हे बिना, काल करे जीव भंग॥			सतनाम
			चौपाई			
सतनाम			कामिनी काल खेले प्रचण्डा। सात द्वीप कहिये नव खण्डा।३२७।			सतनाम
			योगी योग बहुत जो कीन्हा। कामिनी कला खैंचि जीव लीन्हा।३२८।			
सतनाम			जब चीन्हे सत्त शब्द की बानी। मन्डे लोहा बांचे सो प्रानी।३२९।			सतनाम
			शब्द सांगी रन करे सुधारा। काटे काल कुबुद्धि के धारा।३३०।			
सतनाम			होये हिरम्मर निर्मल ज्ञाना। कहो यम के काह बसाना।३३१।			सतनाम
			जीन्हि गहा सत्तगुरु प्रवाना। जग में प्रकट उदित निशाना।३३२।			
सतनाम			सत्त साहब करहिं प्रतिपाला। काटहिं काल कुबुद्धि के काला।३३३।			सतनाम
			ताके लेइ अपने गृह राखा। सत्त शब्द हम निश्चय भाषा।३३४।			
सतनाम			जीव माने तब करहु विचारा। ताके लेई उतारों पारा।३३५।			सतनाम
			कोटि जन्म के कागज कीरा। नाहिं कष्ट काल का पीरा।३३६।			
सतनाम			सत्तनाम सामर्थ्य हहिं भाई। तासे काल सदा डर खाई।३३७।			सतनाम
			सत्तपुरुष से करे न जोरा। धरे तेज तब करे निहोरा।३३८।			
सतनाम			धनुष बाण नहिं देखहिं हाथा। काँपहिं काल ठठावहिं माथा।३३९।			सतनाम
			जो जन हुकुम सत्त कर राखा। तासो काल जोर नहिं भाखा।३४०।			
सतनाम			करे भक्ति निजु प्रेम सुधारा। ताके लेई उतारों पारा।३४१।			सतनाम
			सत्तनाम खाली नहिं भाखो। सत्त सुरति निश्चय चित्र राखो।३४२।			
			साखी - २५			
सतनाम			कहे दरिया सिरताज है, सब विधि पूरण राज। ताके लेई उतारहों सुफल करहिं सब काज॥			सतनाम
			चौपाई			
सतनाम			सन्त सोई सन्तोष में आवै। शील सन्तोष प्रेम रस पावै।३४३।			सतनाम
			साहब सत्त जो हमहिं देखावा। असल ज्ञान कहि जग समुझावा।३४४।			
सतनाम			सत्त ज्ञान कथा यह बानी। समुझहु सन्त प्रेम रस खानी।३४५।			सतनाम
			जो कोई शब्दहिं करे विवेखा। सत्तनाम ज्ञान गमि पेखा।३४६।			
सतनाम			सत्त कहा धोखा मति माने। यह भेद सत्तगुरु सब जाने।३४७।			सतनाम
			कर्ता किरतम करहु विचारा। सत्तपुरुष इन्ह सब ते न्यारा।३४८।			
सतनाम			15			सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
द्वीपर जन्म कृष्ण को भयऊ। राम कृष्ण वोये एके रहेऊ।३४६।	एक ब्रह्म दुई धरा शरीरा। अगम ज्ञान कहों मति धीरा।३५०।	वासुदेव के गृह जन्मे आई। नन्द सुता जो जाये कहाई।३५१।	कंस निकन्दन मर्दन भूता। अनन्त रूप विश्वम्भर दूता।३५२।	सन्त के सन्त दुष्ट के शूरा। तप्त शीतल तन धरा शरीरा।३५३।	अनन्त रूप जो ब्रह्म कहावै। मन मत भाव सबन्हि के भावै।३५४।	योगी यती सब ध्यान लगावै। सो गोरस रस घर-घर खावै।३५५।
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
बाल रूप नन्द घर डोले। मधुरी बानी रस रंग बोले।३५६।	बाल रूप फेरि भया सयाना। वृन्दावन रस रंग जो ठाना।३५७।	मुख मुरली लिये आप बजावै। पर युवतिन्हि से प्रेम बढ़ावै।३५८।	यमुना जल छेके जो घाटा। लेई दान छोड़े सब बाटा।३५९।	दधि दूध सब खाये चोराई। माखन महि बाचे नहिं भाई।३६०।	सो ठाकुर की चोर कहावै। चोरी करे अपने गृह आवै।३६१।	रहे निरन्तर सब घट बोले। बाल ग्वाल लिये संग खोले।३६२।
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मीजे पीठ पेन्हावे सारी। रहे राधे बसि कुंज बिहारी।३६३।	नारद बैठे करहिं विचारा। मन चरित्र केहु केहु निरुआरा।३६४।	देवता दैत के करनी भीना। जैसन करनी सो फल लीन्हा।३६५।	कंस दैत रहे प्रचण्डा। मारेवो माथ भया सत खाण्डा।३६६।	ताहि मारि कुबरी के लीन्हा। कृष्ण चरित्र बिरला केहु चीन्हा।३६७।	कुबरि लेई अपने गृह आई। सो कर्ता की कृतम भाई।३६८।	साखी - २६
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सत्तपुरुष पाखण्ड नहीं, यह कृतम का काम।	छल बल बुद्धि के मारहिं, सोई कृष्ण सोई राम॥	चौपाई	सत्तपुरुष सत्त करो विचारा। सत्तगुरु शब्द करहु निरुआरा।३६९।	जाके दर्द जीव के होई। सत्त शब्द विचारे सोई।३७०।	पाछे कृष्ण मनसा जो कीन्हा। छल बल ते रूकुमिनी के लीन्हा।३७१।	सत्यभामा रूकुमिनि जो रानी। कीन्ह व्याह सब स्वाद जो जानी।३७२।
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
तिनके गर्भ जो रहा संयोगा। भया पुत्र जाने सब लोगा।३७३।						

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	
सतनाम	बिना वीर्य नहिं होय संयोगा। नारी पुरुष करे रस भोगा।३७४।	सतनाम	रूधिर नीर होखे एक संग। परे वीर्य तब उपजे अंगा।३७५।	सतनाम	ताके अचुतानन्द जो भाखे। कामिनि संग सदा चित्त राखे।३७६।	सतनाम	बिना स्वाद का भोग बखाना। षटरस भोजन रसना जो जाना।३७७।
सतनाम	बिना काम कामिनि नहिं नेहा। बिना वीर्य किमि उपजे देहा।३७८।	सतनाम	वृज छोड़ि द्वारिका गयेऊ। नन्द कल्पि अपने गृह रहेऊ।३७९।	सतनाम	जाय द्वारिका मन्दिर संवारी। कीन्हों भोग सब सुन्दर नारी।३८०।	सतनाम	कंचन मन्दिर जो तहाँ संवारा। उपजत बिनसत लागु न वारा।३८१।
सतनाम	दुर्वासा श्राप परा तेहिं जाई। यादो खापि मरे सब भाई।३८२।	सतनाम	पछिला वोयल जानि के दीन्हा। काल सरूप ब्याधा जो कीन्हा।३८३।	सतनाम	मारा ब्याधा बाण विशाला। निकला तन में दुःख अति शाला।३८४।	सतनाम	निकला प्राण जो तन के त्यागा। दुर्वासा श्राप कृष्ण कै लागा।३८५।
सतनाम	साखी - २७						
सतनाम	छप्पन कोटि यादो गये, काल कुबुद्धि के पास।						
सतनाम	उपजि विनसि मर जात हैं, धर्मराज के त्रास॥						
सतनाम	चौपाई						
सतनाम	एक तन छूटे भक्ति विवेखा। सो जीव परे साहब के लेखा।३८६।	सतनाम	जो जन भक्ति तन मन लागा। सत्त शब्द से भव अनुरागा।३८७।	सतनाम	ताके जीवन जन्म सुधारा। जो निजु माने शब्द हमारा।३८८।	सतनाम	सत्त चरण निजु करे निवासा। ताके विघ्न न आवे पासा।३८९।
सतनाम	सत्तनाम में रहे समाई। चीन्हे काल कुबुद्धि के भाई।३९०।	सतनाम	परमार्थ हम कहा बुझाई। चीन्हहु सत्त जीव बांचे भाई।३९१।	सतनाम	सत्त सुबास अमृत रस चाखे। संजीवनि नाम सुरति तहाँ राखे।३९२।	सतनाम	ऊँकार अग्नि जल जावन दीन्हा। प्राण पिंड तहाँ रचि लीन्हा।३९३।
सतनाम	जठर अग्नि तहाँ उदगारा। जल पवना तेहिं भीतर सारा।३९४।	सतनाम	ता बिच कमल नाल का डारा। ऊपर मूल हेठे डार पसारा।३९५।	सतनाम	तामें पवन संचारा करई। अष्टदल कमल फूल तहाँ रहई।३९६।	सतनाम	कमल बिच उन मुनि द्वारा। संचरे सुरति होय उजियारा।३९७।
सतनाम	करे विवेक ज्ञान जब पावै। भंवर गोफा के घाटे आवै।३९८।	सतनाम	सत्त चीन्हे धोखा सब त्यागे। सत्त विचारि सोई निजु पागे।३९९।	सतनाम		सतनाम	
सतनाम	17						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २८			
सतनाम			क्रोध अग्नि क्षमा करे, शीतल परिमल बास।			सतनाम
			मृगा आपु ढूँढ़े नहीं, ढूँढ़त फिरे घास॥			
			चौपाई			
सतनाम			क्रोध नाम केहि का है भाई। कवन क्रोध से तत नसाई।४००।			सतनाम
			सत्त शब्द एह करो विचारी। झारि लोहा करै निरुआरी।४०१।			
			सत्त शब्द उलटे जो आई। तोरब मान कहब समुझाई।४०२।			
सतनाम			सन्त निन्दा नहिं सुनब काना। मर्दब मान के छोड़ब ठेकाना।४०३।			सतनाम
			नेकि कारण कहब बुझाई। ताते जीव कुबुद्धि नहिं खाई।४०४।			
			काम जगावन नारि जो आवै। ज्ञान दृष्टि से दूरि भगावै।४०५।			
सतनाम			वाका नाम क्रोध नहिं भाई। ज्ञान लोहा मंडे चित लाई।४०६।			सतनाम
			दुआ बे दुआ दे नहिं श्रापा। सोई सँभारो मन के दापा।४०७।			
			इन्साफ देखि के बोलब बानी। यही महँ दोष लगे नहिं ज्ञानी।४०८।			
सतनाम			सत्त में काई लागे नहिं पापा। सत्तनाम ताको प्रतापा।४०९।			सतनाम
			क्रोध डंभ बसे जो पासा। कबहिं के कैसन करे निवासा।४१०।			
			कबहिं के डगमग बोले बानी। सामर्थ्य आपु बचावहिं जानी।४११।			
सतनाम			मन के सुमिरहिं तपसी योगी। मनसा दूत करे रस भोगी।४१२।			सतनाम
			मन के लागे करे विनाशा। सुर नर मुनि ग्रिव डारे फाँसा।४१३।			
			श्रृंगी ऋषि जो मन के लागे। मन मत ज्ञान योग जो जागे।४१४।			
सतनाम			बस्ती छोड़ि जंगल के गयऊ। योग मता तहवाँ जो ठयऊ।४१५।			सतनाम
			कन्दमूल सब कीन्ह अहारा। एता कष्ट जो तन को जारा।४१६।			
			मोहनी एक जो कीन्ह सिंगारा। नख सिख शोभा रूप सँवारा।४१७।			
सतनाम			लिन्हों मेवा फल दुइ चारी। चली डगावनि ऋषि के नारी।४१८।			सतनाम
			फल लेइ ऋषि के आगे दीन्हा। मोहनी रूप होय बसि कीन्हा।४१९।			
			करे दंडवत बोलेऊ बानी। मन परपंच ऋषि नहिं जानी।४२०।			
सतनाम			बोले ऋषि तब छोड़ा मौना। कहवाँ ते तुम कीन्हो गवना।४२१।			सतनाम
			फल ले ऋषि मुख महँ दीन्हा। बहुत प्रीति करि चाखन लीन्हा।४२२।			
			तब ऋषि ऐसन बोले बिचारी। कहवाँ फूल फुले फुलवारी।४२३।			
सतनाम			अहे वाटिका मन्दिर हमारा। तहँ मेवा खानि सँवारा।४२४।			सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ऋषि तपस्या पूरण कीन्हा। इन्द्र सेवा हमहिं कहँ दीन्हा।४२५।	चले तुरन्त कामिन के धामा। जहाँ वाटिका सब सुख कामा।४२६।	साखी - २८	सो ऋषि लूटा काल ने, भौ कामिन प्रसंग।	सत्त शब्द चीन्हें बिना, काल करे जीव भंग॥	चौपाई
सतनाम	मन की झाँई काम बिगारे। जीव लेइ परले तर डारे।४२७।	माया छोड़ि मोहनी संग लागै। मोहनी छोड़ि माया संग जागै।४२८।	मोहनी माया होय प्रसंगा। कबहिं के काल करे जीव भंगा।४२९।	चीन्हहु ज्ञानी शब्द हमारा। जो चाहो निजु मुक्ति करारा।४३०।	गौतम ऋषि विगुर्चे जानी। बांधि काल जीव कीन्हों हानी।४३१।	विषम बान उर गहि के मारे। सत्त शब्द बिनु कैसे तारे।४३२।
सतनाम	पण्डों के पण्डुता भया जो रोगा। तासु नारि पाँच रस भोगा।४३३।	कीन्हों कर्म जो कुन्ता नारी। एक नारि है पाँच भतारी।४३४।	पाँचों पण्डो पाँचो से भयऊ। कुन्ता के कन्या सब कहेऊ।४३५।	पाँच भतारी द्रोपदि भयऊ। पाँचों पण्डो के सेवा ठयऊ।४३६।	देखो सब मिलि करो विचार। एक नारि यह पाँच भतारा।४३७।	काकर पुत्र कौन है नारी। पाँच पिता हैं एक महतारी।४३८।
सतनाम	ऐसन कौतुक सब कोई जाने। ताके सब कन्या कै माने।४३९।	एक-एक दाग इन्ह सब कह दीन्हा। बहुत यतन कै वेद ही चीन्हा।४४०।	पण्डित वेदहिं सब कोई जोहा। रसना इन्द्री सब रस दूहा।४४१।	स्वादिक पढ़हि भेद नहिं जाना। ताके काल करे पीसि माना।४४२।	ऋषि औ मुनि रहे अरुझाई। मन की प्रतिमा भक्ति न आई।४४३।	पारासर ऋषि पारा जो जारा। काम कला जीव कीन्ह संहारा।४४४।
सतनाम	गणिका रूप दिव्य जो कीन्हा। ता संग काम कंदला लीन्हा।४४५।	ता संग भोग जो कीन्ह विलासा। गया तप जानि जीव नासा।४४६।	साखी - ३०	शब्द हमारा मानहु, करहु विवेक विचारा।	सत्त शब्द यह चीन्हि के, उतरहु भौ जल पार॥	जो हजरत सो हरि हहीं, वोय गीता पढ़ा कोरान॥
सतनाम	वोय कहे मलेक्ष हैं, वोय काफर कृतम को ज्ञान॥					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	दुई बाजी दोनों दिशि लाया। कहीं हिन्दू कहीं तुर्क कहाया।४४७।	सतनाम	कहीं नमाज कहीं पूजा करावै। कहीं तीर्थ कहीं व्रत दृढ़ावै।४४८।	सतनाम	कहीं आदम कहीं ब्रह्मा होई। कहीं पंडित कहीं काजी सोई।४४९।	सतनाम
सतनाम	कहीं कुरान कहीं पढ़े पुराना। कहीं पीर कहीं गुरु को ज्ञाना।४५०।	सतनाम	कहीं मुर्गा कहीं खसी मरावै। करि ततवीर मुरीद दृढ़ावै।४५१।	सतनाम	कहीं यंत्र सिजरा लिखि दीन्हा। कहीं यादो कहीं भैरो कीन्हा।४५२।	सतनाम
सतनाम	कहीं मन्त्र कहीं बंग पुकारा। कहीं आरती कहीं शंख सुधारा।४५३।	सतनाम	कहीं तस्बीह कहीं माला डाला। कहीं अलफि कहीं ओढ़े दुशाला।४५४।	सतनाम	दिल में दर्द राखु दुर्बेसा। बेदर्दी सो कहा सन्देशा।४५५।	सतनाम
सतनाम	मोलना सो जो मनहिं विचारा। हक हराम करे निरुवारा।४५६।	सतनाम	खून खराब कबहिं नहिं करई। नेकी बदी निशि दिन भरई।४५७।	सतनाम	पाक होय पाक में भिन्ना। असल अल्लाह ताहि के चीन्हा।४५८।	सतनाम
सतनाम	वेवाहा जो नाम बखाना। बेकीमति सिफित जो जाना।४५९।	सतनाम	अल्लाह नाम पाक है ओई। वेवाहा नाम सत्त है सोई।४६०।	सतनाम	गोसा गमि दोनहु कहँ त्यागे। हनोज जिकिर दिल अन्दर पागे।४६१।	सतनाम
सतनाम	खून खराब दोनों से न्यारा। सो दरवेश अल्लाह का प्यारा।४६२।	सतनाम	खून खराब यही महँ भूला। दोज़ख़ द्वारे जीव सो झूला।४६३।	सतनाम	पकड़ि जीव खून कै खाई॥ सो सीताब दोज़ख़ में जाई।४६४।	सतनाम
सतनाम	हुकुम साई का नहीं माना। पढ़ि कुरान का सिफित बखाना।४६५।	सतनाम	मुख से सिफित बहुत जो जाना। दिल में दर्द कबहि नहिं आना।४६६।	सतनाम	बेचून चौगुन जो करे बखाना। पढ़ि कुरान नहिं पहिचाना।४६७।	सतनाम
सतनाम		साखी - ३२				
सतनाम		असल अल्लाह वोय पाक है, सफन सफा उजियारा।				
सतनाम		हाथ पाँव मुख शीस है, रसना दीदमदार॥				
सतनाम		चौपाई				
सतनाम	नेकी बदी हाथ सो पावै। दर्दवंत के बिहिश्त बतावै।४६८।	सतनाम	केते पैगम्बर भये जहाना। मरी मुआ सब मिट्टी समाना।४६९।	सतनाम	मजलिस अगम मर्म नहिं पावै। करे पुण्य दोज़ख़ के जावै।४७०।	सतनाम
सतनाम	पढ़ि कोरान करे शैतानी। पीवै शराब खून खाय बखानी।४७१।					
सतनाम		20				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ३३			
सतनाम			तीनि लोक निरंजन, डारि ठगौरी मारी।			सतनाम
			जो जीव आये लोक से, ताहि भर्म करि डारी॥			
			चौपाई			
सतनाम			जो जीव चेतें करे अचेता। अपने ज्ञान से करे सचेता।४७२।			सतनाम
			अपने ओर सदा ले राखो। रजगुण तमगुण तामस भाखो।४७३।			
सतनाम			दुर्ग दानि है चोर बेकारा। तीनि लोक ठगौरी डारा।४७४।			सतनाम
			काके हुकुम से पुहुमी कीन्हा। कवन हुकुम तीन लोक जो लीन्हा।४७५।			
सतनाम			सत्तपुरुष के पुत्र जो अहई। सत्तारि युग सेवा जो करई।४७६।			सतनाम
			कीन्ह सेवा जो पुरुष के आगे। बहुत युग योग जो जागे।४७७।			
सतनाम			तब पुरुष अस बोले बानी। निरंजन सेवा बहुत बखानी।४७८।			सतनाम
			पुरुष कहा माँगहु कछु दीजै। सत्त वचन माथा नाय लीजै।४७९।			
सतनाम			तीनि लोक यह हम कह दीजै। जहवाँ हाट बसावन कीजै।४८०।			सतनाम
			तीनि लोक का रचना कीन्हा। पुहुमी स्वर्ग पताल जो लीन्हा।४८१।			
सतनाम			पर्दा डारि आपु होय बैठा। आपुहि तीनि लोक महं ऐंठा।४८२।			सतनाम
			जाकर जीव यह सकल पसारा। सत्तपुरुष से छोड़ा करारा।४८३।			
सतनाम			छपलोक छपाये जो लीन्हा। तीनि देव प्रपंच जो कीन्हा।४८४।			सतनाम
			उपजे बिनसे यहहिं डारे। यहहिं लेई फिरि यहहिं मारे।४८५।			
सतनाम			केते युग बीत जब गयऊ। दयावन्त के दर्द जो भयऊ।४८६।			सतनाम
			निरंजन हमसे हुकुम जो लीन्हा। तीनि लोक के ठाकुर कीन्हा।४८७।			
सतनाम			पर्दा डारि निरंजन राखा। मूल छोड़ि ढूँढ़े सब शाखा।४८८।			सतनाम
			तब पुरुष सुकृत के कीन्हा। आपन अंश रचि जो लीन्हा।४८९।			
सतनाम			सुकृत जाय लेहु अवतारा। जम्बु द्वीप मध्य विस्तारा।४९०।			सतनाम
			सत्तपुरुष से वचन जो लीन्हा। आये पयना जग में कीन्हा।४९१।			
सतनाम			जम्बु द्वीप यम का देशा। तहवाँ सत्त जो कहा सन्देशा।४९२।			सतनाम
			प्रथमें सतयुग में चलि आये। सुकृत नाम जो यहां कहाये।४९३।			
सतनाम			सतयुग में सत् शब्द बखाना। सत्तलोक का कहा ठिकाना।४९४।			सतनाम
			योग संतायन नाम कहाया। सत्तनाम कहि ग्यान दृढ़ाया।४९५।			
सतनाम			सूक्ष्म भेद ज्ञान कहि दीन्हा। जो चीन्हे आपन कै लीन्हा।४९६।			सतनाम
			21			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

साखी - ३४

करुणामय को रूप धरि, मुनीन्द्र आये कहाइया।

योग जीत है नाम, जग में ज्ञान दृढ़ाइया॥

चौपाई

कलऊ कबीर काशी स्थाना। नाम संतायन पन्था बखाना।४६७।

सत्त सुकृत का धरा शरीरा। निर्मल ज्ञान कथि कहा कबीरा।४६८।

चला पंथ जग में उजियारा। सत्तनाम यह सबते न्यारा।४६९।

धर्मराय काबू करि डारा। एको जीव नहीं होय उबारा।५००।

सत रहनि सन्तोष जो छूटा। सो जीव धर्मराय ने लूटा।५०१।

षट दर्शन भेष जो कीन्हा। असल ज्ञान सत्त नहिं चीन्हा।५०२।

फेरि कलऊ में धरा शरीरा। अगम ज्ञान असल रंग हीरा।५०३।

सत्तनाम का कीन्ह विचारा। दरिया नाम से पन्था सुधारा।५०४।

करे विवेक जो शब्द हमारा। सो जीव बचे नर्क की धारा।५०५।

नया टकसार जो ज्ञान बखाना। बूझे प्रेम जो निर्मल ज्ञाना।५०६।

दयावन्त जो नाम बखाना। दीनदयाल हहिं कृपानिधाना।५०७।

वेवाहा यह सदा सहाई। सत्तनाम गहो चित लाई।५०८।

सत्तनाम निरकेवल भेटा। जाते जरा मरण भौ मेटा।५०९।

सामर्थ्य नाम है बन्दी छोरा। बचे जीव जो नर्क अधोरा।५१०।

सत्तनाम सत्तपुरुष जो कहिया। अजर काया युग-युग जो रहिया।५११।

साखी - ३५

युग-युग हों चलि आयेउ, ज्ञान जो कहे बखानि।

जो बूझे निर्मल होखे, मेटे नर्क की खानि॥

ब्रह्म विवेक ज्ञान यह, पढ़े सुने चित लाय।

मुक्ति पदार्थ पावहीं, सदा रहे सुख पाय॥

ग्रन्थ ब्रह्म विवेक पूर्ण